मस्जिदे नबवी (सल्ललाहु अलैहिवसल्लिम) की ज़्यारत के शिष्टाचार और पद्धतियाँ

संकलन

वैधीकरण शैख़ अब्दुल अज़ीज़ बिन
अद्‌बुल्लाह बिन बाज़ (रहमतुल्लाह)
मुफ्ती एवं अध्यक्ष सऊदी अरब
विद्वान समिति

दारुल इब्ने असीर

بسم الله الرحمن الرحيم

मस्जिदे रसूल सल्ललाहु अलैहिवसल्लिम की ज़्यारत

अल्हमदुलिल्लाहि वह्दहू अस्सलातु वस्सलामु अलन्नबिय्यी ब'अदह अम्मा ब'आद

हर प्रशंसा सिर्फ अल्लाह के लिए हैं और अल्लाह के नबी ए करीम सल्ललाहु अलैहिवसल्लिम पर सलामती हो ।

हज का कर्तव्य पूरा करने से पहले या पूरा करने के बाद मस्जिदे नबवी सल्ललाहु अलैहिवसल्लिम की ज़्यारत करना सुन्नत है, इस लिए के बुखारी और मुस्लिम में हज़रत अबु हुरैरः रज़िअल्लह अंह की रिवायत है, फरमाते हैं के हुज़ूर ए अकरम सल्ललाहु अलैहिवसल्लिम ने फ़रमाया :" **मेरी इस मस्जिद में पढ़ी हुई एक नमाज़ मस्जिदे हरम के अतिरिक्त अन्य किसी मस्जिद में पढ़ी जाने वाली हज़ार नमाज़ों से श्रेष्ठ है** " ।

हज़रात इब्ने उमर रज़िअल्लह अंह की रतिवायत है के आप सल्ललाहु अलैहिवसल्लिम ने फ़रमाया :" **मेरी**

इस मस्जिद में पढ़ी हुई एक नमाज़ मस्जिदे हरम के अतिरिक्त अन्य किसी मस्जिद में पढ़ी जाने वाली हज़ार नमाज़ों से सर्वश्रेष्ठ है " । [इस हदीस को इमाम मुस्लिम ने रिवायत किया है]

अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़िअल्लह अहं की रिवायत है के आप सल्ललाहु अलैहिवसल्लिम ने फ़रमाया : " **मेरी इस मस्जिद में पढ़ी हुई एक नमाज़ मस्जिदे हरम के अतिरिक्त अन्य किसी मस्जिद में पढ़ी जाने वाली हज़ार नमाज़ों से सर्वश्रेष्ठ है, और मस्जिदे हरम में पढ़ी जाने वाली एक नमाज़ मेरी इस मस्जिद में पढ़ी हुई सौ नमाज़ों से सर्वश्रेष्ठ है "**। [इस हदीस को इमाम अहमद और इब्ने खुज़ैमह और इब्ने हब्बान ने रिवायत किया है]

हज़रत जाबिर राज़ी अल्लाह अंह की रिवायत है के आप सल्ललाहु अलैहिवसल्लिम ने फ़रमाया : " **मेरी इस मस्जिद में पढ़ी हुई एक नमाज़ मस्जिदे हरम के अतिरिक्त अन्य मस्जिदों में पढ़ी जाने वाली हज़ार नमाज़ों से सर्वश्रेष्ठ है,और मस्जिदे हरम में पढ़ी जाने वाली एक नमाज़ मेरी इस मस्जिद में पढ़ी हुई सौ**

नमाज़ों से सर्वश्रेष्ठ है "। [इस हदीस को इमाम अहमद और इब्ने माजः ने रिवायत किया है]

इस अभिप्राय में बहुत से अहादीस का वर्णन है ,जब कोई ज़्यारत करने वाला व्यक्ति मस्जिदे नबवी पहुँचे, तब इसके लिए सलाह है के प्रवेश के समय, पहले अपना दाहिना पैर आगे बढ़ाये और यह प्रार्थना पढ़े :

बिस्मिल्लाह अस्सलातु वस्सलामु अला रसूलल्लाहि, अउज़ुबिल्लाहिल अज़ीम व बिवजहिहिल करीम वस्सलातीनिल खदीम मिनश्शैतानिर्रजीम अल्लाहुम्मफ्तह ली अब्वाबी रहमतिका

शुरू अल्लाह के नाम से और अल्लाह के नबी ए करीम सल्ललाहु अलैहिवसल्लिम पर सलामती हो । मैं अल्लाह से जो सर्वशक्तिमान् और अविनाशी प्रभुत्व का मालिक है से, अभिशापित शैतान के कर्मों की पनाह माँगता हूँ । अए अल्लाह मुझ पर अपने कृपा और दया के द्वार खोल दीजिए।

जिस तरह से एक मुसलमान दुनिया की किसी भी मस्जिद में प्रवेश के समय यह प्रार्थना पढता है, और

मस्जिदे नबवी में प्रवेश के लिए कोई विशेष प्रार्थना नहीं है | फिर उसके बाद वह दो रकअत नमाज़ अदा करे, और जो अपनी दुनिया और आख़िरत की भलाई चाहता हो, उसकी प्रार्थना करें | यदि यह दो रकअत नमाज़ रौज़े मुबारक में अदा करता है तब अधिक सर्वश्रेष्ठ है | इस लिए के आप सल्ललाहु अलैहिवसल्लिम ने फ़रमाया के :" **मेरे घर और मिम्बर के बीच का भाग जन्नत के बाग़ों में से एक बाग़ है**

जैसाकि सनने अबु दावूद में सही पुष्टीकरण के साथ हज़रत अबु हुरैरः रज़ि अल्लाह अंह की यह रिवायत है , फरमाते हैं के आप सल्ललाहु अलैहिवसल्लिम ने फ़रमाया : " **जब भी कोई व्यक्ति मुझ पर सलाम भेजता है , तब अल्लाह मेरी रूह मुझे लौटा देता है ताके मैं उसके सलाम का उत्तर दूँ** "| और यदि ज़्यारत करने वाले व्यक्ति ने आप सल्ललाहु अलैहिवसल्लिम पर सलाम भेजते हुए यह कहे :

अस्सामु अलैक या नबीयलल्लाह, अस्सामु अलैक या खैरुल्लाह मीनल खल्फः, अस्सामु अलैक या सय्यदुल मुरसलीन व इमामुल मुत्तखीन, अशहदु अन्नका खद बालघतल रिसालः, व अदयतल अमानत, व नसीहतुल उम्मत, व जाहिदत फिल्लाहिल हख्खिल जिहादः

सलामती हो आप पर अए अल्लाह के रसूल, सलामती हो आप पर अए अल्लाह की रचना में से सर्वश्रेष्ठ विकल्प, सलामती हो आप पर अए अल्लाह के भेजे गए पैग़म्बरों में से श्रेष्ट और पुण्यात्मा के इमाम । मैं साक्ष्य देता हूँ के आपने हमें अल्लाह ता'आला का सन्देश दिया है,अल्लाह ता'आला पर

विश्वास पूर्ण रूप से दिलाया है, उम्मत का मार्गदर्शन किया, और अल्लाह के रास्ते में कठिन प्रयास किया जैसा आपको प्रयास करना चाहिए ।

तब इस तरह सलाम भेजने में कोई आपत्ति नहीं है, इस लिए के सब आप सल्ललाहु अलैहिवसल्लिम के गुणों में शामिल हैं । और फिर आप सल्ललाहु अलैहिवसल्लिम पर दुरूद भेजने पर कार्य करते हुए शर'ई तौर पर दुरूद और सलाम को एक साथ भेजने का जो साक्ष्य है, उसके अनुसार आपके लिए प्रार्थना करें, और अल्लाह ता'आला के फरमान :

"﴿يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا صَلُّوا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوا تَسْلِيماً﴾"

[٣٣:٥٦]

फिर इसके बाद हज़रत अबु बकर और उमर रज़ि अल्लाह अन्हुमा पर सलाम भेजे, उनके लिए प्रार्थना करे, और उनसे अपनी सहमति को व्यक्त करें ।

हज़रत उमर रज़ि अल्लाह अंह जब भी आप सल्ललाहु अलैहिवसल्लिम आपके दोनों सहाबा ए

कराम पर सलाम भेजते, तब वह अधिकाँश समय इतना ही कहते हैं :

अस्सामु अलैक या रसूलल्लाह, अस्सामु अलैक या अबाबक्र, अस्सामु अलैक या आबादः

सलामती हो आप पर अए अल्लाह के रसूल, सलामती हो आप पर अए अबु बक्र, सलामती हो आप पर अए मेरे पिता ।

फिर वापस लौट जाते । खब्रों की यह ज़्यारत विशेषता के साथ सिर्फ पुरुषों के लिए वैध हैं । जहाँ तक स्त्रियों का प्रश्न है, तो इन्हे खब्रों की ज़्यारत कि अनुमति नहीं है । जैसा के आप सल्ललाहु अलैहिवसल्लिम से सही पुष्टीकरण के साथ यह प्रमाणित है के : " **आप सल्ललाहु अलैहिवसल्लिम ने खब्रों की ज़्यारत करने वाली स्त्रियों पर, खब्रों को प्रार्थना स्थान बनाने वालों और उन पर दीपक लगाने वालों पर अभिशाप भेजा है** " । और जहाँ तक मस्जिदे नबवी में नमाज़ पढ़ने, और इस में बैठकर प्रार्थना करने, और इस जैसे अन्य वो कार्य करने की इच्छ्छा से मदीने मुनव्वरा की यात्रा

करना, जिनका मस्जिद में करना मान्य है, तो इस जैसे कार्य की इच्छा से यात्रा करना सब के लिए मान्य है, जिनका प्रमाण पहले अभिव्यक्ति की हुई अहादीस है ।

ज़्यारत करने वाले व्यक्ति के लिए आवश्यक यह है के अधिक मिलने वाले उपहार को श्रेष्ट समझते हुए पाँच नमाज़ें मस्जिदे नबवी में अदा करें, अधिक से अधिक पठन और माफी माँगे, प्रार्थना करें ।

और नफील नमाज़ पढ़ें । सुझाव यह है के ज़्यारत करने वाला व्यक्ति रौज़े मुबारक में अधिक से अधिक नफील नमाज़ें अदा करें,क्योंकि आप सल्ललाहु अलैहिवसल्लिम की पिछले अभिव्यक्त की गई हदीस है " **मेरे घर और मिम्बर के बीच का भाग जन्नत के बाग़ों में से एक बाग़ है** " जिससे इस स्थान की विशेषता स्पष्ट तौर पर मालूम होती है ।

फ़र्ज़ नमाज़ों के संबंध में ज़्यारत करने वाले व्यक्ति या किसी भी मुसलमान के लिए यह आवश्यक है के वह इसकी तरफ प्रथम प्राथमिकता के रूप में कार्य

करे, और अपनी सामर्थ्य के अनुसार पहली कतार में इनको अदा करने का प्रयत्न करे, इस लिए के सही अहादीस में आप सल्ललाहु अलैहिवसल्लिम से पहली कतार में नमाज़ अदा करने पर प्रेरणा दी गई है । और इसकी प्रेरणा दिलाई गई है, जैसा के आप सल्ललाहु अलैहिवसल्लिम का यह फरमान है के: " **यदि लोगों को यह ज्ञात हो जाये के अज़ान और पहली कतार की क्या विशेषता है, और फिर इस विशेषता को प्राप्त करने के लिए उनके समक्ष भाग्य क्रीड़ा निकलने के अतिरिक्त कोई अन्य मार्ग नहीं रहेगा, तो वह आवश्यक भाग्य क्रीड़ा का उपयोग करेंगे** " - [इस हदीस पर इमाम बुखारी और मुस्लिम सहमत हैं] ।

और आप सल्ललाहु अलैहिवसल्लिम का अपने सहाबा से यह फरमान है के : " **आगे बढ़ते हुए मेरा पालन करें,**

और जो तुम्हारे बाद वाले हैं, वह तुम्हारा पालन करें, और यदि मनुष्य नमाज़ से पीछे रहने का व्यसनी बन जाता है,यहाँ तक के अल्लाह ता'आला उसको पीछे ही रखते हैं " [इस हदीस को इमाम मुस्लिम ने ने रिवायत किया है] ।

इमाम अबु दावूद ने हुस्ने सनद के साथ हज़रत आयेशा रज़ि अल्लाह अन्हा से रिवायत किया है के आप सल्ललाहु अलैहिवसल्लिम ने फ़रमाया के : **"मनुष्य पहली कतार से पीछे रहने का व्यसनी बन जाता है, यहाँ तक के अल्लाह ता'आला उसको जहन्नुम के पिछले भाग में डाल देगा "** [सहीह हदीस [आप सल्ललाहु अलैहिवसल्लिम से प्रमाणित है के आपने अपने सहाबा से फ़रमाया : " **तुम लोग क्यों इस तरह कतार बंदी नहीं करते, जिस तरह फ़रिश्ते अपने रब के सामने कतार बंदी किया करते हैं ?"** तब सहाबा ने कहा : या रसूल अल्लाह : फ़रिश्ते प्रभु के सामने किस तरह कतार बंदी किया करते हैं ? तब आप सल्ललाहु अलैहिवसल्लिम ने कहा : "**वह सबसे पहले पहली कतार पूर्ण करते हैं, और उसके बीच कोई जगह नहीं छोड़ते हैं "**

[इस हदीस को इमाम मुस्लिम ने रिवायत किया है] ।

इस अभिप्राय की अन्य बहुत से अहादीस हैं, जिसके संदर्भ में मस्जिदे नबवी और सामान्य तौर पर अन्य सारी मस्जिदें शामिल हैं । और आप सल्ललाहु अलैहिवसल्लिम से सहीं सनद के साथ यह प्रमाणित हैं के अपने सहाबा को कतार में दाहिनी तरफ खड़े होने पर प्रेरणा देते थे ,और यह सब जानते हैं के प्राचीन मस्जिदे नबवी में कतार का दाहिना भाग रौज़े मुबारक से बाहर की ओर पढता था,

जिसे यह मालूम होता है के पहली कतार, और कतारों की दाहिनी ओर खड़े होने का आयोजन करना रौज़े मुबारक के शिष्टाचार से बड़ा स्थान रखता है, और पहली कतार का पालन करना रौज़े मुबारका में नमाज़ के पालन से अधिक श्रेष्ट हैं । इस संदर्भ के संबंधित अहादीस में विचार विमर्श करने वालों के लिए यह एक खुला प्रमाण हैं [और अल्लाह ता'आला ही सर्वश्रेष्ठ अनुग्रह करने वाला है] ।

किसी के लिए यह मान्य नहीं के वह रौज़े मुबारक की जाली को पूजनीय के तौर पर छूए, या इसका चुंबन लें, या इसके आस पास चक्कर लगाये, इसलिए के हमारे पूर्वजों से ऐसी कोई चीज़ जुडी हुई नहीं है, बल्कि यह तो एक अप्रिय बिदअत है, और इसके लिए यह भी मान्य नहीं के वह आप सल्ललाहु अलैहिवसल्लिम से अपनी किसी आवश्यकता को पूर्ण करने का माँग करे, या समस्या का समाधान, या रोग से चिकित्सा की आशा, या इस जैसी कोई अन्य चीज़ का अनुरोध करें, इसलिए के यह वो चीज़ें हैं, जो सिर्फ अल्लाह ता'आला से ही माँगी जाती हैं, इन चीज़ों अल्लाह ता'आला के अतिरिक्त किसी और से माँगना शिर्क और अल्लाह को छोड़ कर दूसरों की प्रार्थना करने का सामान है, जबकि इस्लाम की नींव दो अत्यावश्यक सिद्धाँत पर है :एक यह के अल्लाह के अतिरिक्त किसी और की प्रार्थना ना की जाये, और दूसरा सिद्धाँत यह है के वही प्रार्थना की जाये जो आप सल्ललाहु अलैहिवसल्लिम से सम्बंधित है । और कलमे तौहीद

– "अल्लाह ता'आला के अतिरिक्त कोई और प्रभु नहीं है और आप सल्ललाहु अलैहिवसल्लिम अल्लाह के नबी है", की गवाही का अर्थ भी यही है ।

तथा इसी तरह किसी के लिए यह वैध नहीं के वह आप सल्ललाहु अलैहिवसल्लिम से सिफ़ारिश की माँग करे, क्योंकि सिफ़ारिश अल्लाह ता'आला का अधिकार है,इसलिए उसी से इसकी माँग की जाएगी, जैसा अल्लाह ता'आला ने फ़रमाया :

﴿قُلْ لِلَّهِ الشَّفَاعَةُ جَمِيعًا﴾ [39:44]

इसलिए आप यह प्रार्थना कर सकते हैं :

अल्लाहुम्मा शफई फी नबिय्यिका, अल्लाहुम्मा शफई फी मलायिकतिका व इबादल मोःमिनीना, अल्लाहुम्मा शफई फी इस्फर'आती

"अए अल्लाह ! आप मुझे आपके नबी ए करीम सल्ललाहु अलैहिवसल्लिम को मेरा रक्षक बनायें, अए अल्लाह ! आप मुझे आपके फरिश्तों और आपके मान्ने वालों को मेरा रक्षक बनायें, अए अल्लाह ! मेरे मृत बच्चों को मेरा रक्षक बनायें" ।

या इस जैसी कोई भी प्रार्थना कर सकते हैं, लेकिन जहाँ तक ख़ब्रों में दफ़न लोगों से माँगने का प्रश्न है, तो ना उन से सिफारिश माँगी जा सकती है और ना कोई और चीज़,चाहे वह अम्बिया हो या उनके अतिरिक्त कोई और हो, इसलिए के शरीअत में इसकी अनुमति नहीं है, और इसलिए भी के मय्यत और इसके कार्यों के बीच कोई संपर्क बाक़ी नहीं रहा, उन चीज़ों के सिवा जिन के बारे में शरीअत की ओर से अनुमति दी गई है ।

सहीह मुस्लिम में हज़रत अबु हुरैरः रज़ि अल्लाह अंह की रिवायत है, फरमाते हैं के आप सल्ललाहु अलैहिवसल्लिम ने फ़रमाया : " **जब इब्ने आदम मर जाता है,तो सिवाए तीन चीज़ों के सारी चीज़ों से उसके कार्यों का संपर्क अंत होजाता है, वह तीन चीज़ें यह है : सदखे जारियाः, या वह इल्म जिससे प्रभु के प्राणियों को लाभ हो रहा है, या वह शिष्ट संतान जो मय्यत के लिए प्रार्थना करते हैं** " ।

परन्तु आप सल्ललाहु अलैहिवसल्लिम से आपकी ज़िन्दगी में और खयामत के दिन सिफारिश का अनुरोध करना वैध है, क्योंकि आप सल्ललाहु

अलैहिवसल्लिम को यह शक्ति प्राप्त है के वह अपने प्रभु से उस मनुष्य के लिए सिफारिश की प्रार्थना करें, और मुसलमान के लिए यह वैध है के वह अपने किसी भाई से यह कहे के :" तुम मेरे लिए विशेष रूप से इस मामले में अपने प्रभु से सिफारिश का अनुरोध करो", जिसका मतलब यह होता है के मेरे लिए प्रार्थना करो, और जिस मनुष्य से प्रार्थना का अनुरोध किया जा रहा है, उसके लिए यह वैध है के वह अपने भाई के लिए अल्लाह से प्रार्थना माँगें और उसकी सिफारिश करे, यदि हलाल चीज़ की सिफारिश की जा रही हो । और खयामत के दिन किसी को भी अल्लाह ता'आला की अनुमति के बिना सिफारिश का अधिकार नहीं होगा, जैसा के अल्लाह ता'आला ने फ़रमाया :

﴿مَن ذَا الَّذِي يَشْفَعُ عِنْدَهُ إِلاَّ بِإِذْنِهِ﴾ [2:255]

जहाँ तक मौत का सम्बन्ध है, तो यह एक विशेष स्थिति है, जिसको ना मनुष्य के मरने से पहले की स्थिति से , और ना मरने की स्थिति के बाद

दोबारा उठाये जाने की स्थिति से जोड़ा जा सकता है | क्योंकि मय्यत के कार्यों का सिलसिला टूट चूका है,और वह मय्यत अपने किये हुए कार्यों के विनती का गिरवी है, सिवई उन चीज़ों में जिनके बारे में शरीयत की ओर से छूट हो,

इसलिए मौत की स्थिति को अन्य स्थितियों से जोड़ना वैध नहीं होगा | और इस बात में कोई संदेह नहीं के आप सल्ललाहु अलैहिवसल्लिम इस दुनिया रूपोश हो जाने के बावजूद भी बरजख वाली ज़िन्दगी में बाहयात हैं, और आपकी यह हयात शोहदा से भी अधिक पूर्ण है, लेकिन आपकी यह हयात उस हयात की तरह नहीं है, जो आपके इंतेखाल से पहले थी, और ना उस हयात की समस्यायें हैं, जो आपको रोज़े खायमत में नसीब होगी, बल्कि यह वह हयात है, जिसका तथ्य और स्थिति अल्लाह ता'आला के अतिरिक्त कोई अन्य नहीं जानता है, और इस लिए पहले व्याख्या की हुई हदीस में आप सल्ललाहु अलैहिवसल्लिम का यह इरशाद है के : " **जो भी मुझ पर सलाम भेजता है, तब अल्लाह ता'आला मेरी रूह मुझ में वापस**

लौटा देता है, ताके मैं उसके सलाम का उत्तर दूँ " |

इस से यह मालूम होता है के आप सल्ललाहु अलैहिवसल्लिम एक मय्यत हैं, और इस बात की भी दलील है के रूह आपके शरीर से अलग हो चुकी है, लेकिन आपकी रूह को लौटाया भी जाता है, आप सल्ललाहु अलैहिवसल्लिम के रूह से मुक्त होने पर कुरआन और हदीस की दलाईल स्पष्ट और साफ़ हैं, और उलमा की भी इस पर सहमति है | लेकिन रूह से मुक्त होना आप सल्ललाहु अलैहिवसल्लिम की बरज़ख वाली ज़िन्दगी में या बाहयात होने का विरोध नहीं है, जैसा के शोहदा की बरज़ख वाली ज़िन्दगी में बाहयात होना असंभव बात नहीं है,

इसलिए अल्लाह ता'आला ने फ़रमाया :

﴿وَلاَ تَحْسَبَنَّ الَّذِينَ قُتِلُواْ فِي سَبِيلِ اللّهِ أَمْوَاتاً بَلْ أَحْيَاء عِندَ رَبِّهِمْ يُرْزَقُونَ﴾ [3:169]

हमने यहाँ इस विषय पर लम्बी चर्चा इसलिए की है के हमें इसकी आवश्यकता महसूस हो रही थी,

क्योंकि अधिकतर लोग इस विषय में संदेह पैदा कर रहे हैं, शिर्क का निमत्रण दे रहे है, और अल्लाह ता'आला को छोड़ कर अभिशापितों की प्रार्थना का प्रोसाहन कर रहे हैं, हम अल्लाह ता'आला से प्रार्थना करते हैं के अल्लाह ता'आला हमें और सारे मुसलामानों को हर उस चीज़ से सुरक्षित रखे जो इस्लामी शरीयत के व्यतिरेक में हो - अल्लाह बेहतर जनता है ।

आज कल जो लोग आप सल्ललाहु अलैहिवसल्लिम की ख़ब्र के पास आवाज़ें ऊँची कर रहे हैं, और अधिक समय तक खड़े रहते हैं । यह बिलकुल अवैध है, इसलिए के अल्लाह ता'आला ने आप सल्ललाहु अलैहिवसल्लिम की आवाज़ से अपनी आवाज़ ऊँची करने को, और आप सल्ललाहु अलैहिवसल्लिम के साथ अपनी परस्पर बातचीत की तरह ऊँची आवाज़ में बात करने से रोका है, तथा अपनी आवाज़ को छोटी रखने का सुझाव दिया है, जैसके अल्लाह ता'आला का फरमान है:

﴿يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَاتَرْفَعُوا أَصْوَاتَكُمْ فَوْقَ صَوْتِ النَّبِيِّ وَلَا تَجْهَرُوا لَهُ بِالْقَوْلِ كَجَهْرِ بَعْضِكُمْ لِبَعْضٍ أَن تَحْبَطَ أَعْمَالُكُمْ وَأَنتُمْ لَا تَشْعُرُونَ﴾ [49:2,3]

और इसलिए भी के आप सल्ललाहु अलैहिवसल्लिम की ख़ब्र के निकट अधिक समय तक खड़े रहने, और बार-बार सलाम भेजते रहने से लोगों के जमा होने की सुनिश्चित आशंका है, जिससे आप सल्ललाहु अलैहिवसल्लिम की ख़ब्र के निकट शोर शराबा होने और आवाज़ें ऊँची होने की संभावना बढ़ जाती है, और यह कार्य उन स्पष्ट और साफ़ आयात में मुसलामानों को जिन चीज़ों का आदेश दिया गया है, उसके बिलकुल विपरीत है, आप सल्ललाहु अलैहिवसल्लिम हयात की स्थिति और वफ़ात की स्थिति दोनों में सम्मानजनक है, इसलिए मुसलामानों के लिए यह उपयुक्त नहीं है के वे आप सल्ललाहु अलैहिवसल्लिम की ख़ब्र के निकट ऐसा कोई कार्य करे, जो शरई शिष्टाचार के विपरीत है, तथा इसी तरह कुछ ज़्यारत करने वाले जो इस बात का प्रयत्न करते हैं के वह ख़ब्र की ओर मुड़कर अपने हाथ

उठाकर प्रार्थना करते हैं, यह सब हमारे पूर्वजों, सहाबा ए कराम, और ताबईन के कार्य के विपरीत हैं, बल्कि यह तो नई पैदा की हुई बिदअत है । और निश्चित रूप से आप सल्ललाहु अलैहिवसल्लिम ने फ़रमाया : " तुम पर मेरी सुन्नत, और मेरे बाद मेरे अनुग्रहित खुलफा ए राशिदीन की सुन्नत पर कार्य करना आवश्यक है, इसको तुम मजबूती के साथ पकडे रहो, और नए खड़े किये जाने वाले कार्यों से दूर रहो, क्योंकि हर नई खड़ी की जाने वाली चीज़ बिदअत में गिनी जाएगी, और हर बिदअत गुमराही है " [इस हदीस को इमाम अबू दावूद और इमाम निसायिः ने सनद ए हुस्न के साथ रिवायत किया है] ।

और आप सल्ललाहु अलैहिवसल्लिम का यह भी इरशाद है के : " **जिस किसी ने भी हमारे इस दीन में ऐसी नई चीज़ें पैदा की,जो इस में पहले कभी नहीं थी, तो वह अस्वीकार्य है** " [इस हदीस को इमाम बुखारी और इमाम मुस्लिम ने रिवायत किया है] । और मुस्लिम की एक रिवायत में ऐसे आया है :

"जो कोई हमारे कार्य के विपरीत कोई कार्य करे, तो उसका यह कार्य अभिशापित है "।

और अली बिन हुसैन जैन उल अबिदीन रज़ि अल्लाह अंह ने एक व्यक्ति को आप सल्ललाहु अलैहिवसल्लिम की ख़ब्र के निकट प्रार्थना करते हुए देखा, तो उसको रोका, और कहा के क्या मैं तुम्हें वह हदीस ना सुनाऊँ, जिसको मैंने अपने पिता से, उन्होंने अपने पिता से, और उन्होंने आप सल्ललाहु अलैहिवसल्लिम से रिवायत किया है के आपने फ़रमाया : " **मेरी ख़ब्र को उर्स की जगह मत बनाओ, और ना अपने घरों को ख़ब्र बनाओ, और मुझ पर दुरूद और सलाम भेजते रहो, क्योंकि तुम्हारा सलाम तुम जहाँ कहीं भी रहो, मुझे पहुँच जाता है "** [इस हदीस को इमाम हाफिज मुहम्मद बिन अब्दुल वाहिद अलमुखद्दसी ने अपनी किताब "अलमुख्तार" में वर्णन किया है] ।

उसी तरह कुछ ज़्यारत करने वाले व्यक्ति आप सल्ललाहु अलैहिवसल्लिम पर दुरूद और सलाम भेजते समय नमाज़ की तरह दाहिना हाथ बाएँ हाथ पर रखते हुए सीने पर या सीने के नीचे बाँधकर खड़े

होते है, आप सल्ललाहु अलैहिवसल्लिम पर दुरूद और सलाम भेजते समय इस तरह खड़ा होना वैध नहीं है, और ना शासकों और धनवान, या किसी अन्य व्यक्ति के सामने इस तरह खड़े होना वैध नहीं है, इस लिए के विनम्रता और विनयशीलता और प्रार्थना की स्थिति है, जो सिर्फ अल्लाह के लिए ही ज़ेबा देता है, जैसाकि हाफिज इब्ने हज्र ने अपनी किताब फत्हुल बारी में उलमा से यह प्रतिलिपि किया है, और यह कोई मुश्किल विषय नहीं है,

और जो व्यक्ति उसमें चिंतन करे, और उसका उद्देश्य पूर्वजों का अनुपालन करना हो, तब उसको यह बात स्पष्ट रूपसे समझ में आ जायेगी । और जहाँ तक उस व्यक्ति का प्रश्न है, जिस पर घबराहट, नफ़्सानी हवस, अँधा अनुकरण, और पूर्वजों के अनुपालन का निमंत्रण देने वालों के साथ आपत्तिजनक बातें करना का भूत सवार हो, तो ऐसे व्यक्ति का विषय अल्लाह ही के हवाले है । हम प्रार्थना करते हैं के अल्लाह ता'आला हमें और इन्हे सन्मार्ग से अनुग्रह और सच्चाई को अन्य चीज़ों पर विजई रखने की तौफ़ीक़ प्रदान करे । निश्चित रूप से अल्लाह ता'आला ही वह पाक ज़ात है, जो सर्वश्रेष्ठ कारसाज है ।

और उसी तरह कुछ लोग दूर से ही मज़ार ए शरीफ की ओर मुड कर,दुरूद और सलाम गुनगुनाने लगते हैं । यह कार्य भी पिछले कार्यों की तरह नई खड़ी हुई चीज़ों में गिना जाती है, और मुसलमान के लिए यह वैध नहीं है के वह इस दीन में कोई ऐसी चीज़ खड़ा करे, जिसकी अनुमति उसके प्रभु की ओर से नहीं मिली हो, इस तरह के कार्य करने वाले व्यक्ति आप सल्ललाहु अलैहिवसल्लिम से प्रेम और स्नेह की

जगह आपसे बैर और कपट से अधिक अनुरूप है । इमाम मालिक रहमतुल्लाह अलैह ने उस कार्य को और उस जैसे अन्य कार्यों को अस्वीकार किया और कहा के : " इस उम्मत के आखरी व्यक्ति का सुधार भी उसी चीज़ से होगी, जिससे इस उम्मत के पहले व्यक्ति का सुधार हुआ था" । यह सब जानते हैं के उम्मत के व्यक्तियों के सुधार नींव की आप सल्ललाहु अलैहिवसल्लिम,खुलफा ए राशिदीन, सहाबा ए कराम, और ताबेईन के तौर व तरीके पर थे, और इस में आखरी में आने वाले व्यक्तियों का सुधार इन्ही तौर व तारीखों को मजबूती से पड़के रखने और उस पर चलने से होगी ।

प्रार्थना है के अल्लाह ता'आला मुसलामानों को उन चीज़ों के अनुग्रहित करे, जिसमें उनके लिए मुक्ति और कल्याण हो, और दुनिया और आख़िरत में सम्मान एवं सफलता हो, निश्चित रूपसे अल्लाह ता'आला बड़ा ही दयालु और दानशील है ।

चेतावनी

हुज़ूर ए अकरम सल्ललाहु अलैहिवसल्लिम की ज़्यारत वाजिब नहीं है, और ना हज के लिए शर्त की स्थिति रखती है, जैसा के कुछ आम लोगों का विचार है, बल्कि यह उस व्यक्ति के पक्ष में है , जो मस्जिदे रसूल में जाये, या वह उसके निकट में रहता है । और वह व्यक्ति जो मस्जिदे नबवी से दूर स्थान में रहता है, तब उसे खब्र ए रसूल की ज़्यारत के इरादे से यात्रा करने की अनुमति नहीं है, परन्तु मस्जिदे नबवी की ज़्यारत का इरादे से यात्रा करना उसके लिए मान्य होगा, और जब वह मदीने मुनव्वरा पहुँच जाये, तब खब्र ए शरीफ की ज़्यारत करे, और हज़रत अबू बकर और उमर रज़ि अल्लाह अन्हुमा के खब्रों की भी ज़्यारत करे । ध्यान रखना चाहिए के आप सल्ललाहु अलैहिवसल्लिम के खब्र की

ज़्यारत मस्जिदे नबवी की ज़्यारत के सन्दर्भ में आ गई है । इस लिए के बुखारी और मुस्लिम में सहीह सनद के साथ यह प्रमाणित है के आपने फ़रमाया : " तीन मस्जिदों के अतिरिक्त किसी और मस्जिद के लिए यात्रा नहीं की जाए, एक मस्जिदे हरम, दूसरा मेरी यह मस्जिद [अर्थात मस्जिदे नबवी] और तीसरी मस्जिदे अख्सा " ।

और आप सल्ललाहु अलैहिवसल्लिम के ख़ब्र, या आप के अतिरिक्त किसी अन्य के ख़ब्र की ज़्यारत करना वैध होता, तो आप सल्ललाहु अलैहिवसल्लिम इस ओर उम्मत का मार्गदर्शन फरमाते, और इसकी विशिष्टता से अपनी उम्मत को अवगत कराते, क्योंकि आप सल्ललाहु अलैहिवसल्लिम लोगों की सब से अधिक कल्याण चाहने वाले, अल्लाह ता'आला का सब से अधिक ज्ञान रखने वाले,और अपने अंदर सब से अधिक अल्लाह ता'आला का डर रखने वाले थे, आपने हर चीज़ को विस्तार से पहुँचाया है, अपनी उम्मत को हर भलाई का मार्ग बताया है, और हर बुराई से उन्हें सावधान भी कर दिया है, कैसे आप सल्ललाहु अलैहिवसल्लिम के ख़ब्र की ज़्यारत के लिए

यात्रा वैध हो सकती है? जबकि आप सल्ललाहु अलैहिवसल्लिम ने तीन मस्जिदों के अतिरिक्त किसी अन्य मस्जिद के लिए यात्रा करने से रोकते हुए फ़रमाया के : " तुम मेरी ख़ब्र को उर्स की जगह मत बनाओ और ना अपने घरों को खब्रस्तान बनाओ, और मुझ पर दुरूद और सलाम भेजते रहो, निश्चित रूप से तुम्हारा सलाम मुझे पहुँचा दिया जाता है, चाहे तुम कहीं भी रहो " ।

आप सल्ललाहु अलैहिवसल्लिम के ख़ब्र की ज़्यारत के लिए यात्रा को वैध कहने से आप की ख़ब्र का उर्स की जगह बनना, और वही सर्वोत्कृष्टता और अतिशयोक्ति की समस्यायें आवश्यक तौरपर पैदा हो जाती है, जिन में लिप्त होने का आप सल्ललाहु अलैहिवसल्लिम ने संदेह व्यक्त किया था, जैसा अधिकाँश लोग ख़ब्रों के निकट अतिशयोक्ति और सर्वोत्कृष्टता के शिकार हैं, और इनका यह विश्वास है के आप सल्ललाहु अलैहिवसल्लिम की ख़ब्र कि ज़्यारत के लिए यात्रा करना वैध है ।

इस समस्या से सम्बंधित जिन अहादीस को दलील बनाते हुए ख़ब्र ए रसूल की ज़्यारत के लिए यात्रा

को वैध कहा जाता है, वह सब अहादीस कमजोर सनद वाली, बल्कि इस विषय में अमान्य अहादीस है, जैसा के इनके कमज़ोर होने पर कई उलमा ए कराम, जैसे दारे खत्नी, बेहखी, हाफिज इब्ने हज्र इस्त्यादि ने सचेत किया है, और इन कमज़ोर अहादीस की उन सहीह अहादीस से कोई तुलना या मेल ही नहीं हो सकता है, जिन में तीन मस्जिदों के अतिरिक्त कोई अन्य मस्जिद के लिए यात्रा को हराम घोषित किया गया है ।

खारी ए कराम : हम आपके सामने इस समस्या से सम्बंधित कुछ अमान्य अहादीसों के विषय का वर्णन करने जा रहे हैं, ताके आपको इनकी जानकारी होजाये, और इनके कपट में फसने से आप सुरक्षित रह सकें ।

पहली हदीस : " जिसने हज किया और मेरी ज़्यारत नहीं की, निश्चित रूप से उसने मुझ पर ज़ुल्म किया " ।

दूसरी हदीस : " जिसने मृत्यु के बाद मेरी ख़ब्र की ज़्यारत की, तब वह ऐसे होगा जैसा के इसने मेरी ज़िन्दगी में मेरी ज़्यारत की है " ।

तीसरी हदीस : " जिसने एक ही साल में मेरी ज़्यारत की और मेरे पिता इब्राहीम कि ज़्यारत की, तो मैं अल्लाह के पास उस के लिए जन्नत का जमानतदार हूँ " ।

चौथी हदीस : " जिसने मेरे ख़ब्र कि ज़्यारत की, उस के लिए मेरी हिमायत अनिवार्य है " ।

यह और इस जैसी अन्य अहादीस का आप सल्ललाहु अलैहिवसल्लिम से कोई प्रमाण नहीं है । हाफ़िज़ इब्ने हज्र ने अत्तल्खीस नामक किताब में इस जैसी अधिकांश अहादीस का वर्णन करने के बाद कहा के : " इस हदीस की सभी रिवायात कमज़ोर है "। और हाफ़िज़ अखील ने कहा के : " इस समस्या के विषय में कोई सहीह हदीस नहीं है " । शैख़ उल इस्लाम इब्ने तैमिया अलैहिर रहमा ने कहा के : " इस प्रकार की सभी अहादीस अमान्य है । और आपके लिए उन की जानकारी रखना, उनको अपने

ध्यान में रखना, और उनसे सचेत रहना काफी है । यदि इस प्रकार का कोई कार्य सहीह सनद से प्रमाणित होता, तब लोगों में सब से पहले सहाबा ए कराम उस पर कार्य करते,लोगों के सामने इसका स्पष्टीकरण करते, और इसका निमंत्रण देते, इस लिए के सहाबा ए कराम, अम्बिया ए कराम के बाद लोगों में सब से अधिक पुण्य, अल्लाह ता'आला के बारे में और उसकी मान्य की हुई चीज़ों का लोगों से अधिक ज्ञान रखने वाले, और अल्लाह के लिए लोगों की अधिक से अधिक भलाई चाहने वाले हैं । और जब सहाबा से इस प्रकार की कोई चीज़ का कोई सुझाव नहीं हुआ है, तब इस से स्पष्ट यह होता है के यह कार्य अमान्य है, और इस विषय से सम्बंधित कोई चीज़ सहीह सनद से सामने भी आ जाये, तो इसको ज़्यारत ए ख़ब्र की ऐसी मान्य स्थिति पर व्याख्या किया जायेगा, जिस में सिर्फ ख़ब्र की ज़्यारत के लिए यात्रा की स्थिति ना आती हो, ताके दोनों प्रकार की अहादीस पर कार्यान्वयन हो जाए [अल्लाह ता'आला सर्वशक्तिमान जानते हैं] ।

अध्याय

मदीने की ज़्यारत करने वाले व्यक्ति के लिए मान्य यह है के वह मस्जिदे खुबा की ज़्यारत करें, और इस में नमाज़ अदा करे, इस लिए के बुखारी और मुस्लिम में हज़रत इब्ने उमर रज़ि अल्लाह अंह की रिवायात है, फरमाते हैं के हुज़ूर ए अकरम सल्ललाहु अलैहिवसल्लिम, सवार या पैदल, दोनों स्थितियों में मस्जिदे खुबा की ज़्यारत फरमाते, और इसमें दो रकअत नमाज़ पढ़ते ।

हज़रत सील बिन हनीफ रज़ि अल्लाह अंह की रिवायात है, फरमाते हैं के आप सल्ललाहु अलैहिवसल्लिम ने फ़रमाया : " **जिस व्यक्ति ने अपने घर में स्वच्छता प्राप्त की, फिर मस्जिदे खुबा पहुँच कर इस में नमाज़ अदा की, तो उसे उमरः की अदाईगी का पुण्य मिलेगा** " । [इस हदीस को इमाम अहमद, निसायिः, हाकिम और इब्ने माजः ने रिवायात किया, यहाँ वर्णन किये गए शब्द इब्ने माजः के हैं] । ज़्यारत करने वाले के लिए यह भी आवश्यक है के वह जन्नतुल बखी और शोहदा की ख़ब्रों और हज़रत हमज़ह रज़ि अल्लाह अंह के ख़ब्र की ज़्यारत करे, इस लिए के आप सल्ललाहु

अलैहिवसल्लिम भी उनकी ख़ब्रों की ज़्यारत किया करते थे, और उनके लिए प्रार्थनायें किया करते थे, और इस लिए भी के आप सल्ललाहु अलैहिवसल्लिम का इरशाद है के :

"ख़ब्रों की ज़्यारत करो,क्योंकि इससे आख़िरत की याद ताज़ा होती है " [इस हदीस को इमाम मुस्लिम ने रिवायात किया है] ।

जब भी आप सल्ललाहु अलैहिवसल्लिम और सहाबा ए कराम ज़्यारत ए ख़ब्रों के लिए जाया करते थे,तब आप इन्हे यह प्रार्थना सिखाया करते थे :

अस्सलामु अलैकुम अहलुद दयार मीनल मोःमिनीना वाल मुस्लिमीन व इन्ना इंशा अल्लाहु बिकुम ला हखूनं नस'अलल्लाहु लना वलकुमुल आफियः

सलामती हो आप पर अए खब्र के निवासियों, अल्लाह पर विश्वास करने वाले और मुसलमानों । बेशक यदि अल्लाह इच्छुक हो तब हम भी आपके साथ जुड़ जाएंगे । मैं अल्लाह ता'आला से प्रार्थना करता हूँ के वह सर्वशक्तिमान आपको और हमको अच्छा रखे ।

[इस हदीस को इमाम मुस्लिम ने हज़रत सुलेमान इब्ने बरीदः से, और उन्होंने अपने पिता से रिवायात किया है] ।

इमाम तिर्मिज़ी ने हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि अल्लाह अंह से रिवायात प्रतिलिपि की है, फरमाते हैं के आप सल्ललाहु अलैहिवसल्लिम मदीने मुनव्वरा के ख़ब्रों के पास से गुज़र रहे थे , तब अपने उन ख़ब्रों की ओर मुड़कर कहा :

अस्सलामु अलैकुम या अहलुल खुबूर यघफिरुल्लाहु लना वलकुम अन्तुम सलफ्ना व नहनु बिल अस्र

अए खब्रों के निवासियों अल्लाह ता'आला की तुम पर सलामती हो । अल्लाह ता'आला आपको और हमको माफ़ करे । आप हमें से पहले यहाँ अए हो और हम आप के पीछे यहाँ आएंगे ।

इन सारी अहादीस से मालूम यह होता है के ख़ब्रों की ज़्यारत की शरई स्थिति का उद्देश्य यह है के उस से आख़िरत की याद ताज़ा हो, मृत मुसलमान व्यकितयों के लिए दया और मुक्ति की प्रार्थना हो,

मृत मुसलमान व्यकितयों की ख़ब्रों के पास उनसे माँगने,उनकी ख़ब्रों के पास खड़े रहने , या उनसे अपनी इच्छाओं का व्यक्त करना, या रोगों की चिकित्सा, या उनके माध्यम या सदखे से अल्लाह

ता'आला से माँगने के लिए ज़ियारते ख़ब्र करना अस्वीकार्य बिदअत है, ना अल्लाह ता'आला ने और ना उसके रसूल सल्ललाहु अलैहिवसल्लिम ने इस कार्य को मान्य ठहराया है, और ना पूर्वजों के कार्यों से इसका कोई प्रमाण है । बल्कि यह तो वह अनुचित कार्य है, जिसे आप सल्ललाहु अलैहिवसल्लिम ने रोका है, जबकि आप सल्ललाहु अलैहिवसल्लिम ने इरशाद फ़रमाया है के : " **ख़ब्रों की ज़्यारत करो, और गलत बातें ना करो** " । यह ऊपर वर्णन किये हुए सभी कार्यों में एक जैसी चीज़ यह है के यह सब के सब बिदअत में शामिल हैं, लेकिन इनके स्तर अलग अलग है, इन में से कुछ बिदअत हैं, शिर्क नहीं है, जैसे ख़ब्रों के पास अल्लाह ता'आला से माँगना, और मृत व्यक्ति के लिए और उसके माध्यम से अल्लाह ता'आला से प्रार्थना करना । और अन्य कुछ वह कार्य है, जो शिर्क ए अकबर में शामिल है, जैसे मृत व्यक्ति से सहायता माँगना । पिछले पन्नों में विवरण के साथ इसका वर्णन हो चूका है । इसलिए सचेत रहें, दूर रहें,

और अपने प्रभु से सदबुद्धि और सच की ओर मार्गदर्शन के लिए प्रार्थना करें, निश्चित रूप से अल्लाह ता'आला सदबुद्धि देने वाला, और हिदायत देने वाला है, अल्लाह ता'आला के अतिरिक्त कोई देवता नहीं है, और ना उसके अतिरिक्त कोई प्रभु नहीं है ।

यह ऊपर वर्णन की गई चीज़ें हमने लिखने का इरादा किया, और अल्लाह अव्वल और आखिर हम अल्लाह ता'आला के आभारी हैं ।

आरम्भ और अंत में प्रशंसा केवल अल्लाह की ही हो, और अल्लाह ता'आला की सलामती हो उसके भेजे गए पैग़म्बरों और उसकी रचनाओं में सबसे सर्वश्रेष्ठ मुहम्मद सल्ललाहु अलैहि वसल्लिम, और आपके घर वालों और आपके सहाबा ए कराम पर और उन सब पर जो आपका आख़िरत के दिन तक पालन करते हैं ।